CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

गाँधी शैक्षिक चिंतन के आधारभूत तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयाराम यादव
शोधार्थी
डॉ. देवेन्द्र कुमार
प्रोफेसर–निर्देशक
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर (राज.)
Email: devpaarth13@gmail.com, Mob: 8209986606

First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

शोध-सार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, बहुआयामी, कौशलपरक तथा मूल्याधारित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस नीति का उद्देश्य केवल ज्ञान का संप्रेषण नहीं, बल्कि ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो सृजनात्मक, नैतिक, आत्मनिर्भर तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त हो। यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक वैश्विक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निर्मित की गई है, तथापि इसके अनेक प्रावधान महात्मा गाँधी के शैक्षिक चिंतन से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष से प्रभावित दिखाई देते हैं।

महात्मा गाँधी ने शिक्षा को जीवन, श्रम, नैतिकता तथा सामाजिक उपयोगिता से जोड़ने पर बल दिया था। उनके द्वारा प्रतिपादित नई तालीम का उद्देश्य शिक्षा को व्यवहारिक, उत्पादक तथा आत्मनिर्भरता से युक्त बनाना था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास व्यावसायिक शिक्ष मातृभाषा में शिक्षण मूल्यपरक शिक्षा तथा समग्र विकास जैसी अवधारणाएँ गाँधीवादी शैक्षिक दृष्टिकोण की झलक प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख प्रावधानों का गाँधीजी के शैक्षिक चिंतन के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नई शिक्षा नीति में निहित अनेक तत्व गाँधीवादी शिक्षा–दर्शन के आधुनिक स्वरूप को अभिव्यक्त करते हैं तथा भारतीय शिक्षा को अधिक मानवीय, आत्मनिर्भर एवं जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्य शब्द : *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, महात्मा गाँधी, नई तालीम, मूल्यपरक शिक्षा, आत्मनिर्भरता, कौशल विकास, मातृभाषा।*

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास का मूल आधार होती है। समय के साथ समाज की आवश्यकताओं में परिवर्तन होने पर शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। इसी दृष्टि से भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण किया गया, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक प्रासंगिक, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण बनाना है।

महात्मा गाँधी भारतीय शिक्षा चिंतन के ऐसे विचारक हैं, जिन्होंने शिक्षा को जीवन के साथ जोड़ने का प्रयास किया। उनका विश्वास था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक श्रेष्ठ मानव का निर्माण करना है। गाँधीजी की नई तालीम शिक्षा को श्रम, नैतिकता, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न प्रावधानों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसके अनेक आयाम गाँधीजी की शैक्षिक अवधारणाओं से सम्य रखते हैं। यही तथ्य इस अध्ययन का मूल आधार है।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में शिक्षा अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। बढ़ती प्रतिस्पर्धा, परीक्षा–केन्द्रित दृष्टिकोण, रोजगार सम्बन्धी समस्याएँ तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास शिक्षा के समक्ष गंभीर प्रश्न उपस्थित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन चुनौतियों के समाधान का प्रयास करती है।

गाँधीजी का शैक्षिक चिंतन शिक्षा को जीवनोपयोगी, मूल्याधारित तथा आत्मनिर्भर बनाने पर बल देता है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन और गाँधीवादी शिक्षा–दर्शन के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होता हैं।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

- **ताराचन्द्र वर्मा (1969) "गाँधी जी और शिक्षा"।**
- **आशा कौशिक (2000) गाँधी : नई सदी के लिए"।**
- **क्लाउड मार्केविट्स (2003) "दी–अन गाँधीयन गाँधी"।**
- **डॉ. इकबाल नारायण (2005) "आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ"।**
- **वंदना सक्सेना (2006) गाँधी : जीवन और दर्शन।**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं गाँधीवादी शैक्षिक चिंतन का विश्लेषण

समग्र विकास की अवधारणा

गाँधीजी शिक्षा को शरीर, मन तथा आत्मा के संतुलित विकास का माध्यम मानते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास पर बल देती है। नीति में बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक विकास को समान महत्व प्रदान किया गया है।

मातृभाषा में शिक्षा

गाँधीजी का मत था कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी कक्षा पाँच तक तथा यभासंभव आगे भी मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में शिक्षण की अनुशंसा की गई है।

कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा

गाँधीजी ने शिक्षा को उत्पादक कार्यों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी कौशल विकास, इन्टर्नशिप तथा व्यावसायिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यह गाँधीजी की कार्य–आधारित शिक्षाा की अवधारणा का समकालीन रूप है।

आत्मनिर्भरता का विकास

गाँधीजी स्वावलम्बन को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आत्मनिर्भर भारत के निर्माण हेतु विद्यार्थियों में नवाचार, उद्यमिता तथा समास्या–समाधान कौशल विकसित करने पर बल देती है।

मूल्यपरक शिक्षा

गाँधीजी के अनुसार चरित्र निर्माण शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नैतिकता, संवेदनशीलता, सहिष्णुता, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा संवैधानिक कर्तव्यों के विकास पर विशेष बल दिया गया है।

अनुभवात्मक अधिगम

गाँधीजी के शिक्षण को क्रियात्मक एवं अनुभवाधारित बनाने के पक्षधर थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर अनुभवात्मक अधिगम, परियोजना कार्य तथा व्यावहारिक शिक्षण को प्रोत्साहित करती है।

समावेशी शिक्षा

गाँधीजी शिक्षा को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने के समर्थक थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर बल देती है।

गाँधीवादी शैक्षिक चिंतन की समकालीन प्रासंगिकता

आज का समाज तकनीकी प्रगति के साथ–साथ नैतिक एवं सामाजिक चुनौतियों का भी सामना कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में गाँधीजी के शैक्षिक विचार शिक्षा को केवल ज्ञान–केन्द्रित न बनाकर मूल्य–केन्दित बनाने की प्रेरणा देते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गाँधीवादी दृष्टिकोण की उपस्थिति भारतीय शिक्षा को अधिक मानवीय, लोकतांत्रिक तथा जीवनोपयोगी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित अनेक प्रावधान महात्मा गाँधी के शैक्षिक चिंतन के मूल सिद्धान्तों से साम्य रखते हैं। समग्र विकास, मातृभाषा में शिक्षा, कौशल विकास, आत्मनिर्भरता, मूल्यपरक शिक्षा तथा अनुभवात्मक अधिगम जैसी अवधारणाएँ गाँधीवादी शिक्षा–दर्शन के आधुनिक स्वरूप को अभिव्यक्त करती है। यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समकालीन आवश्यकताओं और वैश्विक चुनौतियों को ध्यान में रखकर निर्मित की गई है, फिर भी उसके मूल में निहित मानवीय, नैतिक तथा व्यावहारिक दृष्टिकोण गाँधीजी के शैक्षिक चिंतन की प्रासंगिकता को पुनः स्थापित करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को गाँधीवादी आदर्शों के निकट ले जाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ सूची

1. गाँधी, मोहनदास करमचंद (1948) हिन्द स्वराज, अहमदाबाद नवजीवन।
2. गाँधी, मोहनदास करमचंद (1951) नई तालीम की ओर, अहमदाबाद, नवजीवन।
3. गाँधी, मोहनदास करमचंद (1957) सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, अहमदाबाद, नवजीवन।
4. कुमार, कृष्ण. (2017) शिक्षा, ज्ञान और समाज, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
5. पाठक, आर.पी. (2018), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, नई दिल्ली, पियर्सन एजुकेशन।
6. अग्रवाल, जे.सी. (2016), शिक्षा के सिद्धान्त एवं आधार, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस।
7. शर्मा, आर.ए. (2019), शैक्षिक दर्शन एवं भारतीय शिक्षा, मेरठ, आर.लाल बुक डिपो।
8. सिंह, वाई.के. (2015), ''शैक्षिक दर्शन'', आगरा, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
9. नायक जे.पी. (2012), ''भारतीय शिक्षा का विकास, नई दिल्ली, मैकमिलन इंडिया।
10. यूनेस्का (2015), "Education 2030 : Incheon Declaration and Framework for Action, Paris, Unesco